# अक्टूबर माह की साधनायें

## नवरात्रि महानवमी पर विराट त्रिपुर सुन्दरी साधना

इस साधना से अकूत धन की प्राप्ति, यश, सम्मान, पद-प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य, दीर्घायु जीवन, आरोग्यता व समस्त प्रकार के भोगों की प्राप्ति, स्वयं का भवन, पुत्र-पौत्र उन्नति, शत्रु नाश, उत्तम पति या पत्नी की प्राप्ति, राज्य में उन्नति आदि सुस्थितियों की प्राप्ति निश्चित रूप से सम्भव है।

उक्त साधना नवरात्रि महानवमी पर जो कि दिनांक 01 अक्टूबर 2025 को सम्पन्न करे, जो कि सितम्बर की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 3 पर अंकित है।

## विजयदशमी पर वर- वरद विजय श्री गं साधना

भगवान श्रीगणेश विघ्नकर्ता और विघ्नहर्ता दोनों स्वरूप में कार्य करते हैं। आसुरी प्रकृति के दुष्टों के लिये विघ्नकर्ता है, तो वहीं अपने भक्तों के लिये विघ्नहरण, सर्व कामनाफलप्रद, अनन्तान्तसुखदा और सुमंगल प्रदाता है। जीवन की समस्त प्रकार के भौतिक व दैविक शत्रुओं पर विजय प्राप्ति के लिये यह अचूक साधना है।

उक्त साधना विजयदशमी पर जो कि दिनांक 02 अक्टूबर 2025 को सम्पन्न करे, साधना प्रक्रिया सितम्बर की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 25 पर अंकित है।

## पापाकुंशा एकादशी पर सर्वपापदोष शमनः पापकुंशा साधना

जीवन में व्याप्त सभी प्रकार के दोषों को चाहे वह दरिद्रता हो, अकाल मृत्यु हो, कलिष्ट रोग हो या और कोई कुस्थितियां हो, उसे पूर्णतः समाप्त करने में यह साधना सहायक है।

उक्त साधना पापाकुंशा एकादशी पर जो कि दिनांक 03 अक्टूबर 2025 को सम्पन्न करे, जो कि सितम्बर की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 3 पर अंकित है।

## शरद् पूर्णिमा पर चन्द्रोमया लक्ष्मी धन सम्पदा साधना

चन्द्रमा की षोड़श कलाओं की अमृत वर्षा से जीवन में सौन्दर्य, राग, संगीत की उत्पति होती है और जीवन में शुष्कता समाप्त होती है। गृहस्थ सुख के आकांक्षी साधकों के लिये यह उपयोगी साधना है, जिससे जीवन में श्रेष्ठ जीवन साथी, संतान सुख, सुख-समृद्धि, धन सम्पदा की निश्चित प्राप्ति होती है।

उक्त साधना शरद् पूर्णिमा पर जो कि दिनांक 6 अक्टूबर 2025 को सम्पन्न करे, साधना प्रक्रिया सितम्बर की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 26 से 27 पर अंकित है।

# नवरात्रि त्रि-शक्ति दीक्षा

**नवरात्रि** का यह **विशेष पर्व** अपने भीतर से **अज्ञानता, दोष, कमियां** निकाल बाहर कर अपने भीतर **शक्ति** भरने का **पर्व** है, यदि संसार **विपत्ति सागर** है, तो उसमें से पूर्ण रूप से बाहर निकलने के लिये **शक्तिमान** होना ही पड़ेगा, अपने भीतर **शक्ति सामर्थ्य** भरनी पड़ेगी, यह **शक्ति** ही अपने अलग-अलग रूप में **विद्यमान** हो कर मनुष्य के **कार्य** सम्पन्न करती है।

**शक्ति प्राप्ति** का तात्पर्य बल से नहीं लगाया जा सकता यद्यपि **व्यवहार** में **शक्ति का प्रयोग** इसी रूप में व्यवहृत किया जाता है। **भगवती शक्ति** के **तीन विशिष्ट स्वरूपों** का वर्णन है कि **चित्तस्वरूपिणी महासरस्वती, सम्पूर्ण द्रव्य, धन-धान्य रूपिणी महालक्ष्मी** तथा **कालविजयी आनन्दरूपिणी महाकाली** की **अभ्यर्थना-आराधना** सम्पन्न करता है, उसके जीवन में किसी प्रकार की **न्यूनता** नहीं रहती।

**नवरात्रि** के **चैतन्य दिवसों** पर **सद्गुरूदेव जी** द्वारा **त्रि-शक्ति दीक्षा** ग्रहण करने पर **महाकाली चेतना** युक्त **शत्रु नाश, रोग नाश, भय बाधा नाश** जैसी **असुरमय कुस्थितियों** का **शमन** होता है। जिसके फलस्वरूप **सांसारिक जीवन ऐश्वर्य प्राप्ति, धन सुख, आयु सुख परिवार सुख** युक्त **महालक्ष्मीमय सुस्थितियों** की **वृद्धि** होती है। इसके साथ ही **देवी सरस्वती** जीवन को **उन्नति** के ओर ले जाने वाली, **पवित्रता, शांति, विद्या, कला, सम्मान की सुस्थितियां** प्राप्त होती है।

**Each शारदीय नवरात्रि दीक्षा न्यौछावर ₹1500/-**